9 बाल-लीला

मैया मोरी, मैं नहीं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीवट भटक्यो, सांझ परे घर आयो।।

मैं बालक बहियन को छोटो, छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।।

तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहि पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजिहैं, जानि परायो जायो।।

यह लै अपनी लकुटी कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।
सूरदास, तब बिहंसी जसोदा, लै उर कंठ लगायो।।

शब्दार्थ

भटक्यो - भटकना
परायो - दूसरा
बिहँसी - हँसकर
बहियन - बाँह
लकुटी - छोटी लाठी,
छींको - सींका (रस्सी की बनी होती है, जिसे छत/छप्पर से लटकाकर रखा जाता है और उस पर कोई चीज रखी जाती है।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से-

1. अपने साथियों द्वारा लगाये गए आरोपों को गलत बताने के लिए कृष्ण अपनी माँ के सामने कौन-कौन से तर्क रखते हैं?
2. **नीचे कुछ पंक्तियां दी गई हैं। उन्हें पढ़िए और बाल-लीला के पदों में से उन पंक्तियों को छांटकर लिखिए जिनका भावार्थ इन पंक्तियों में समाहित है-**

   (क) माँ, मैं अभी बहुत छोटा हूँ, छोटी-छोटी मेरी बांहे हैं, सींका मैं किस तरह पा सकता हूँ। माँ, मेरे सभी दोस्त अभी दुश्मन बन बैठे हैं। मेरे मुँह पर जबरदस्ती माखन लगा दिये हैं।

   (ख) माँ, अपनी यह लाठी और कम्बल लो। तूने मुझे बहुत परेशान किया है। इस पर यशोदा हँसकर कृष्ण को गले से लगा लेती है।

पाठ से आगे-

1. अपने बचपन की कोई भी मजेदार घटना लिखिए।
2. **निम्नलिखित पद का अर्थ अपनी मातृभाषा में कीजिए।**

   (क) मैं बालक बहियन को छोटो, छींको केहि विधि पायो।
   ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।।

   (ख) तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहि पतियायो।
   जिय तेरे कछु भेद उपजिहैं, जानि परायो जायो।।

व्याकरण-

1. **निम्नलिखित शब्दों को स्थानीय बोली में क्या कहते हैं? लिखिए।**

   भटक्यो, बहियन, छींको, परायो, लुकटी ।

कुछ करने को-

1. प्रस्तुत कविता में कृष्ण के 6-7 वर्ष की उम्र का वर्णन है। अपने याददास्त के आधार पर लिखिए कि जब आप इस उम्र के थे तो उस समय आपकी माँ आपके लिए क्या-क्या करती थी?
2. सूरदास की कोई दूसरी रचना को भी खोजिए और पढ़िए।

WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC